

## Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्थ	सद्गन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्ज	उज़्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस	हिंस	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्ग्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्य	पद्य	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्पवास	उत्पवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्र्यास	अग्र्यास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में  
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा  
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की  
मेहनत, चीन से आया  
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद  
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़  
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के  
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो  
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में  
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा  
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की  
मेहनत, चीन से आया  
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद  
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़  
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के  
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो  
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

## 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

### केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

## फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे



## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

पपकपवपवकवव  
 पपखपवपवखवव  
 पपगपवपवगवव  
 पपघपवपवघवव  
 पपङ्गपवपवङ्गवव  
 पपचपवपवचवव  
 पपछपवपवछवव  
 पपजपवपवजवव  
 पपझपवपवझवव  
 पपञपवपवञवव  
 पपटपवपवटवव  
 पपठपवपवठवव  
 पपडपवपवडवव  
 पपढपवपवढवव  
 पपणपवपवणवव  
 पपतपवपवतवव  
 पपथपवपवथवव  
 पपदपवपवदवव  
 पपधपवपवधवव  
 पपनपवपवनवव  
 पपपपवपवपवव  
 पपफपवपवफवव  
 पपबपवपवबवव  
 पपभपवपवभवव  
 पपमपवपवमवव  
 पपयपवपवयवव  
 पपरपवपवरवव  
 पपलपवपवलवव  
 पपळपवपवळवव  
 पपवपवपवववव  
 पपशपवपवशवव  
 पपषपवपवषवव  
 पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव  
पपक्कपवपवक्कवव  
पपखपवपवखवव  
पपगपवपवगवव  
पपजपवपवजवव  
पपङ्गपवपवङ्गवव  
पपढ्गपवपवढ्गवव  
पपफ्फपवपवफ्फवव  
पपयपवपवयवव  
पपक्षपवपवक्षवव  
पपज्ञपवपवज्ञवव

पपअपवपवअवव  
पपअैपवपवअैवव  
पपअँपवपवअँवव  
पपइपवपवइवव  
पपईपवपवईवव  
पपउपवपवउवव  
पपऊपवपवऊवव  
पपएपवपवएवव  
पपऐपवपवऐवव  
पपँपवपवँवव  
पपैपवपवैवव  
पपआपवपवआवव  
पपओपवपवओवव  
पपऔपवपवऔवव  
पपऋपवपवऋवव  
पपॠपवपवॠवव  
पपऌपवपवऌवव  
पपॡपवपवॡवव

पपक्रपवपवक्रवव  
 पपस्त्रपवपवस्त्रवव  
 पपग्रपवपवग्रवव  
 पपघ्नपवपवघ्नवव  
 पपङ्गपवपवङ्गवव  
 पपघ्नपवपवघ्नवव  
 पपज्जपवपवज्जवव  
 पपझपवपवझवव  
 पपञ्जपवपवञ्जवव  
 पपट्रपवपवट्रवव  
 पपट्रपवपवट्रवव  
 पपङ्गपवपवङ्गवव  
 पपढ्रपवपवढ्रवव  
 पपण्यपवपवण्यवव  
 पपत्रपवपवत्रवव  
 पपभ्रपवपवभ्रवव  
 पपद्रपवपवद्रवव  
 पपभ्रपवपवभ्रवव  
 पपन्नपवपवन्नवव  
 पपप्रपवपवप्रवव  
 पपफ्रपवपवफ्रवव  
 पपब्रपवपवब्रवव  
 पपभ्रपवपवभ्रवव  
 पपभ्रपवपवभ्रवव  
 पपग्रपवपवग्रवव  
 पपरूपवपवरूपवव  
 पपल्रपवपवल्रवव  
 पपत्रपवपवत्रवव  
 पपश्रपवपवश्रवव  
 पपभ्रपवपवभ्रवव  
 पपस्त्रपवपवस्त्रवव  
 पपह्रपवपवह्रवव

पपळ्पवपवळ्वव  
पपक्षपवपवक्षवव  
पपझापवपवझवव

पपक्तपवपवक्तवव  
पपदूपवपवदूवव  
पपदृपवपवदृवव  
पपङ्चपवपवङ्चवव  
पपज्जपवपवज्जवव  
पपज्थपवपवज्थवव  
पपज्यपवपवज्यवव  
पपज्सपवपवज्सवव  
पपछ्यपवपवछ्यवव  
पपत्यपवपवत्यवव  
पपठ्यपवपवठ्यवव  
पपड्यपवपवड्यवव  
पपढ्यपवपवढ्यवव  
पपटृपवपवटृवव  
पपटुपवपवटुवव  
पपठुपवपवठुवव  
पपडूपवपवडूवव  
पपडुपवपवडुवव  
पपडूपवपवडूवव  
पपत्तपवपवत्तवव  
पपत्खपवपवत्खवव  
पपत्थपवपवत्थवव  
पपत्नपवपवत्नवव  
पपत्सपवपवत्सवव  
पपत्यपवपवत्यवव  
पपद्गपवपवद्गवव  
पपद्गपवपवद्गवव  
पपद्गपवपवद्गवव  
पपद्गपवपवद्गवव

पपद्वपवपवद्ववव  
पपद्धपवपवद्धवव  
पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव  
पपद्वपवपवद्ववव  
पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव  
पपद्द्वपवपवद्द्ववव  
पपद्भपवपवद्भवव  
पपद्भपवपवद्भवव  
पपलजपवपवलजवव  
पपल्यपवपवल्यवव  
पपद्भपवपवद्भवव  
पपलभपवपवलभवव  
पपल्यपवपवल्यवव  
पपलभपवपवलभवव  
पपद्यपवपवद्यवव  
पपद्भपवपवद्भवव  
पपष्टपवपवष्टवव  
पपलजपवपवलजवव  
पपष्टपवपवष्टवव  
पपद्भपवपवद्भवव  
पपल्लपवपवल्लवव  
पपल्लपवपवल्लवव  
पपल्लपवपवल्लवव  
पपल्लपवपवल्लवव  
पपल्लपवपवल्लवव  
पपल्लपवपवल्लवव

पपहुपवपवहुवव  
पपहूपवपवहूवव  
पपहृपवपवहृवव  
पपह्पवपवह्वव  
पपहुपवपवहुवव  
पपहूपवपवहूवव

पपरुपवपवरुवव  
पपरुपवपवरुवव  
पपदुपवपवदुवव  
पपदूपवपवदूपव  
पपदृपवपवदृवव

#### Vowel sign spacing

पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप  
पपपंपपपरंपपकंपप

पपपापपरापपकापप  
पपपिपपरिपपकिपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप

पपपौपपरौपपकौपप  
पपपौपपरौपपकौपप  
पपपौपपरौपपकौपप

पपपुपपरुपपकुपप  
पपपूपपरुपपकूपप  
पपपृपपरुपपकृपप  
पपपृपपरुपपकृपप  
पपप्लपपरुपपकृपप  
पपप्लपपरुपपकृपप

पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप  
पपपपपरपपकंपप

पपपऽपवपववऽवव  
पप?पवपव?वव  
पपपःपवपववःवव

#### Numeral spacing

००००१०१०११  
००१०१०११११  
००२०१०१२११  
००३०१०१३११  
००४०१०१४११  
००५०१०१५११  
००६०१०१६११  
००७०१०१७११  
००८०१०१८११  
००९०१०१९११

#### Letter-punct spacing

पपक, पवक.  
पपख, पवख.  
पपग, पवग.  
पपघ, पवघ.  
पपङ, पवङ.  
पपच, पवच.  
पपछ, पवछ.  
पपज, पवज.  
पपझ, पवझ.  
पपञ, पवञ.  
पपट, पवट.  
पपठ, पवठ.  
पपड, पवड.  
पपढ, पवढ.  
पपण, पवण.  
पपत, पवत.  
पपथ, पवथ.  
पपद, पवद.  
पपध, पवध.  
पपन, पवन.  
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.  
पपब, पवब.  
पपभ, पवभ.  
पपम, पवम.  
पपय, पवय.  
पपर, पवर.  
पपल, पवल.  
पपळ, पवळ.  
पपव, पवव.  
पपश, पवश.  
पपष, पवष.  
पपस, पवस.  
पपह, पवह.  
पपक्र, पवक्र.  
पपख, पवख.  
पपग, पवग.  
पपज, पवज.  
पपड़, पवड़.  
पपढ़, पवढ़.  
पपफ़, पवफ़.  
पपय़, पवय़.  
पपक्ष, पवक्ष.  
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.  
पपऐ, पवऐ.  
पपऑ, पवऑ.  
पपइ, पवइ.  
पपई, पवई.  
पपउ, पवउ.  
पपऊ, पवऊ.  
पपए, पवए.  
पपऐ, पवऐ.  
पपऐ, पवऐ.  
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.  
पपओ, पवओ.  
पपऔ, पवऔ.  
पपक्र, पवक्र.  
पपक्र, पवक्र.  
पपल, पवल.  
पपल, पवल.

पपङ्ग, पवङ्ग.  
पपछ्, पवछ्.  
पपट्र, पवट्र.  
पपट्र, पवट्र.  
पपङ्ग, पवङ्ग.  
पपद्र, पवद्र.  
पपद्र, पवद्र.  
पपर, पवर.  
पपह, पवह.  
पपळ्, पवळ्.

पपक्त, पवक्त.  
पपदृ, पवदृ.  
पपदृ, पवदृ.  
पपट्ट, पवट्ट.  
पपट्ट, पवट्ट.  
पपट्ट, पवट्ट.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.  
पपड्ड, पवड्ड.

पपद्, पवद्.  
पपष्ट, पवष्ट.  
पपल्ज, पवलज.  
पपष्ठ, पवष्ठ.  
पपल्भ, पवलभ.  
पपह्, पवह्.  
पपह्, पवह्.  
पपह्, पवह्.  
पपह्, पवह्.

पपहु, पवहु.  
पपह्, पवह्.  
पपह्, पवह्.  
पपह्, पवह्.  
पपहु, पवहु.  
पपह्, पवह्.  
पपहु, पवहु.  
पपरु, पवरु.  
पपरु, पवरु.  
पपदु, पवदु.  
पपदृ, पवदृ.  
पपदृ, पवदृ.

-  
पपक; पवक:  
पपख; पवख:  
पपग; पवग:  
पपघ; पवघ:  
पपङ; पवङ:  
पपच; पवच:  
पपछ; पवछ:  
पपज; पवज:  
पपझ; पवझ:  
पपञ; पवञ:  
पपट; पवट:  
पपठ; पवठ:



pg 9/18

pg 10/18

**"अपवपअ"****"इपवपइ"****"ईपवपई"****"उपवपउ"****"ऊपवपऊ"****"एपवपए"****"ऐपवपऐ"****"ऎपवपऎवव"****"ऐपवपऐ"****"आपवपआ"****"ओपवपओ"****"औपवपऔ"****"ऋपवपऋ"****"ॠपवपॠ"****"लृपवपलृ"****"लृपवपलृ"****"ङपवपङ्ग"****"छपवपछ्छ"****"टपवपट्ट"****"टपवपट्ट"****"डपवपड्ड"****"डपवपड्ड"****"द्रपवपद्र"****"रुपवपरू"****"हपवपहृ"****"ळपवपळ्ळ"****"क्तपवपक्त"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"लजपवपलज"****"ष्ठपवपष्ठ"****"ल्भपवपल्भ"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"डुपवपडु"****"हृपवपहृ"****"हृपवपहृ"****"हृपवपहृ"****"हृपवपहृ"****"डुपवपडु"****"हृपवपहृ"****"रूपवपरू"****"रूपवपरू"****"दुपवपदु"****"दूपवपदू"****"दूपवपदू"**

Num-punct spacing

पवप ₹१०१ वपव

पवप ₹२०१ वपव

पवप ₹३०१ वपव

पवप ₹४०१ वपव

पवप ₹५०१ वपव

पवप ₹६०१ वपव

पवप ₹७०१ वपव

पवप ₹८०१ वपव

पवप ₹९०१ वपव

०००,०१०,०११

००१,०१०,१११

००२,०१०,२११

००३,०१०,३११

००४,०१०,४११

००५,०१०,५११

००६,०१०,६११

००७,०१०,७११

००८,०१०,८११

००९,०१०,९११

०००.०१०.०११

००१.०१०.१११

००२.०१०.२११

००३.०१०.३११

००४.०१०.४११

००५.०१०.५११

००६.०१०.६११

००७.०१०.७११

००८.०१०.८११

००९.०१०.९११

li Vowel sign - base

पपकिपपकिंपपकिंपप

पपखिपपखिंपपखिंपप

पपगिपपगिंपपगिंपप

पपघिपपघिंपपघिंपप

पपङिपपङिंपपङिंपप

पपचिपपचिंपपचिंपप

पपछिपपछिंपपछिंपप

पपजिपपजिंपपजिंपप

पपझिपपझिंपपझिंपप

पपञिपपञिंपपञिंपप

पपटिपपटिंपपटिंपप

पपठिपपठिंपपठिंपप

पपडिपपडिंपपडिंपप

पपढिपपढिंपपढिंपप

पपणिपपणिंपपणिंपप

पपतिपपतिंपपतिंपप

पपथिपपथिंपपथिंपप

पपदिपपदिंपपदिंपप

पपधिपपधिंपपधिंपप

पपनिपपनिंपपनिंपप

पपपिपपपिंपपपिंपप

पपफिपपफिंपपफिंपप

पपबिपपबिंपपबिंपप

पपभिपपभिंपपभिंपप

पपमिपपमिंपपमिंपप

पपयिपपयिंपपयिंपप

पपरिपपरिंपपरिंपप

पपलिपपलिंपपलिंपप

पपळिपपळिंपपळिंपप

पपविपपविंपपविंपप

पपशिपपशिंपपशिंपप

पपषिपपषिंपपषिंपप

पपसिपपसिंपपसिंपप

**पपहिपपहिंपपहिंपप****पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप****पपझिपपझिंपपझिंपप**

pg 12/18

pg 13/18



पपध्कपपध्खपपघापपध्धपपध्दपपध्धप  
 पध्ठपपध्जपपध्झपपध्झपपध्ठपपध्ठपपध्ठप  
 पध्दपपघापपघ्तापपध्थपपध्दपपध्धपपध्जप  
 पध्तापपध्मपपध्कपपध्खपपध्भपपध्मपपध्मप  
 पध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मप  
 पध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मप  
 पध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मप  
 पध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मप  
 पध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मपपध्मप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप  
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप  
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप  
पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप  
पइरपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप  
पइसपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप  
पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप  
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्जपपङ्ठपपङ्ठपपङ्प  
पङ्पपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप  
पङ्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप  
पङ्पपपङ्रपपङ्लपपङ्ळपपङ्ळपपङ्वपपङ्शप  
पङ्षपपङ्सपपङ्हपपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप  
पङ्ङपपङ्ढपपङ्फपपङ्यपप

पपम्कपपम्खपपम्पापपम्यपपम्डपपम्यपपम्ठप  
पम्जपपम्झापपम्जपपम्ठपपम्ठपपम्डपपम्ठप  
पम्णापपम्नपपम्यपपम्दपपम्यपपम्नपपम्नपपम्यप  
पम्फपपम्बपपम्यपपम्मापपम्यपपम्नपपम्नपपम्नप  
पम्ळपपम्ळपपम्त्वपपम्शपपम्यपपम्सपपम्हप  
पम्कपपपम्खपपम्पापपम्जपपम्डपपम्डपपम्फप  
पम्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप  
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप  
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप  
पइफपपइबपपइभपपइमपपपपइयपपइलपपइळप  
पइवपपइशपपपपइषपपइसपपइहपप

## less common half-forms

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप  
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप  
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप  
पदफपपदबपपदभपपदमपप पपद्यपपदलप  
पदळपपदमपवपपदशपप पपद्यपपदसपपदहपप

पपसकपपसखपपसगपपसघपपसङपपसचपपसछप  
पसजपपसझपपसञपपसटपपसठपपसडपपसढप  
पसणपपसतपपसथपपसदपपसधपपसनपपसमप  
पसफपपसबपपसभपपसमपप पपसयपपसलप  
पसळपपसपवपपसशपपपसषपपससपपसहपप

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप  
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप  
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप  
पदफपपदबपपदभपपदमपप पपद्यपपदलप  
पदळपपदमपवपपदशपप पपद्यपपदसपपदहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप  
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप  
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप  
पक्रथपपक्रनपपक्रमपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप  
पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रमपवपपक्रशप  
पपक्रषपपक्रसपपक्रहपप

पपरकपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप  
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप  
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप  
परनपपरमपपरफपपरबपपरभपपरमप  
परयपपरलपपरळपपरमपवपपरशप  
परषपपरसपपरहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचपपक्रछप  
पक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठपपक्रडपपक्रढप  
पक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदपपक्रधपपक्रनपपक्रमप  
पक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळप  
पक्रमपवपपक्रशपप पपक्रमपपक्रमपपहपप

पपघकपपघखपपघगपपघघपपघङपपघचपपघछप  
पघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघडपपघढप  
पघणपपघतपपघथपपघदपपघधपपघनपपघमप  
पघफपपघबपपघभपपघमपप पपघयपपघलपपघळप  
पघमपवपपघशपप पपघमपपघमपपहपप

पपचकपपचखपपचगपपचघपपचङपपचचपपचछप  
पचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडपपचढप  
पचणपपचतपपचथपपचदपपचधपपचनपपचमप  
पचफपपचबपपचभपपचमपपचयपपचलपपचळप  
पचमपवपपचशपप पपचमपपचमपपहपप

पपङकपपङखपपङगपपङघपपङङपपङचपपङछप  
पङजपपङझपपङञपपङटपपङठपपङडपपङढप  
पङणपपङतपपङथपपङदपपङधपपङनपपङमप  
पङफपपङबपपङभपपङमपपङयपपङलप  
पङळपपङमपवपपङशपपपङषपपङसपपङहपप

पपङकपपङखपपङगपपङघपपङङपपङचपपङछप  
पङजपपङझपपङञपपङटपपङठपपङडपपङढप  
पङणपपङतपपङथपपङदपपङधपपङनप  
पङमपपङमपपङमपपङमपपङमपप पपङयप  
पङलपपङलपपङमपवपपङशपपपङषपपङसप  
पङहपप

पपञकपपञखपपञगपपञघपपञङपपञचप  
पञछपपञजपपञझपपञञपपञटपपञठप  
पञडपपञढपपञणपपञतपपञथपपञदपपञधप  
पञनपपञमपपञफपपञबपपञभपपञमपपञयप  
पञलपपञळपपञमपवपपञशपप पपञमपपञसप  
पञहपप

पपणकपपणखपपणगपपणघपपणङपपणचपपणछप  
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप  
पणणपपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप  
पणफपपणबपपणभपपणमपप पपणयपपणलप  
पणळपपणमपवपपणशपप पपणमपपणसपपणहपप

पपत्रकपपत्रखपपत्रगपपत्रघपपत्रङपपत्रचपपत्रछप  
पत्रजपपत्रझपपत्रञपपत्रटपपत्रठपपत्रडपपत्रढप  
पत्रणपपत्रतपपत्रथपपत्रदपपत्रधपपत्रनपपत्रमप  
पत्रफपपत्रबपपत्रभपपत्रमपपत्रयपपत्रलप  
पत्रळपपत्रमपवपपत्रशपप पपत्रमपपत्रसपपत्रहपप

पपश्रकपपश्रखपपश्रगपपश्रघपपश्रङपपश्रचपपश्रछप  
पश्रजपपश्रझपपश्रञपपश्रटपपश्रठपपश्रडपपश्रढप  
पश्रणपपश्रतपपश्रथपपश्रदपपश्रधपपश्रनपपश्रमप  
पश्रफपपश्रबपपश्रभपपश्रमपप पपश्रयपपश्रलप  
पश्रळपपश्रमपवपपश्रशपप पपश्रमपपश्रसपपश्रहपप

पपध्रकपपध्रखपपध्रगपपध्रघपपध्रङपपध्रचपपध्रछप  
पध्रजपपध्रझपपध्रञपपध्रटपपध्रठपपध्रडपपध्रढप  
पध्रणपपध्रतपपध्रथपपध्रदपपध्रधपपध्रनपपध्रमप  
पध्रफपपध्रबपपध्रभपपध्रमपप पपध्रयपपध्रलप  
पध्रळपपध्रमपवपपध्रशपप पपध्रमपपध्रसपपध्रहपप

पपन्त्रकपपन्त्रखपपन्त्रगपपन्त्रघपपन्त्रङपपन्त्रचपपन्त्रछप  
पन्त्रजपपन्त्रझपपन्त्रञपपन्त्रटपपन्त्रठपपन्त्रडपपन्त्रढप  
पन्त्रणपपन्त्रतपपन्त्रथपपन्त्रदपपन्त्रधपपन्त्रनपपन्त्रमप  
पन्त्रफपपन्त्रबपपन्त्रभपपन्त्रमप पपन्त्रयपपन्त्रलप  
पन्त्रळपपन्त्रमपवपपन्त्रशपप पपन्त्रमपपन्त्रसपपन्त्रहपप

पपफ्रकपपफ्रखपपफ्रगपपफ्रघपपफ्रङपपफ्रचपपफ्रछप  
पफ्रजपपफ्रझपपफ्रञपपफ्रटपपफ्रठपपफ्रडपपफ्रढप  
पफ्रणपपफ्रतपपफ्रथपपफ्रदपपफ्रधपपफ्रनपपफ्रमप  
पफ्रफपपफ्रबप पपफ्रयपपफ्रलपपफ्रळपपफ्रमपवप  
पफ्रशपप पपफ्रमपपफ्रसपपफ्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप  
पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप  
पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रत्तपपप्रथपपप्रदपपप्रथप  
पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप  
पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप  
पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप  
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप  
पक्कापपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप  
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप  
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप  
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप